SL NO	Date	Name of the Teacher	Subject	Sem	Topic	Mode Adopted
01	11.04.2020	Md Mahtab Ahmad	TC-201	B.Ed Sem-02	Interest and Attitude and their assessment	Pdf

M.M. Ahmad
Dept of Education
Godda college, Godda

Scanned by CamScanner

अभिरुचि का अर्थ
(Meaning of Interest)

अभिरुचि एक ऐसा पद (term) है जिसका प्रयोग प्रारंभ से ही मनोवैज्ञानिकों द्वारा ढीले-ढाले अर्थ में किया जाता रहा है। रेबर (Reber, 1985) के अनुसार प्रारंभ में इस पद का प्रयोग ध्यान, जिज्ञासा, प्रेरणा, इच्छा आदि जैसे शब्दों के समानांतर किया जाता था। परन्तु, 1940 के बाद मनोवैज्ञानिकों ने, विशेषकर शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने इस पद का प्रयोग इतना व्यापक (comprehensive) और ढीले-ढाले अर्थ में करना अच्छा नहीं समझा।

ड्रीवर एवं वालरस्टीन (Drever & Wallerstein, 1984) के अनुसार अभिरुचि पद का प्रयोग आजकल सामान्यतः दो अर्थों में होता है—कार्यात्मक अर्थ (functional meaning) तथा संरचनात्मक अर्थ (structural meaning)। कार्यात्मक अर्थ में अभिरुचि से तात्पर्य एक ऐसे भाव (feeling) की अनुभूति से होता है जिसे एक सार्थक अनुभूति (worth-while experience) कहा जाता है तथा जो किसी वस्तु पर दिए जानेवाले ध्यान (attention) या कोई किए जानेवाले कार्य से संबंधित होता है। इसी अर्थ में सैक्स[1] (Sax, 1974) ने अभिरुचि को परिभाषित करते हुए कहा है, "किसी अन्य कार्य की तुलना में एक कार्य को पसंद करना ही अभिरुचि कहलाता है।" संरचनात्मक अर्थ में अभिरुचि से तात्पर्य व्यक्ति के व्यक्तित्व के एक ऐसे अर्जित या जन्मजात तत्त्व (element) से होता है जिसके कारण उसमें किसी वस्तु के प्रति एक सार्थक अनुभूति उत्पन्न होती है।

अभिरुचि का प्रयोग चाहे कार्यात्मक अर्थ में हो या संरचनात्मक अर्थ में, अभिरुचि में व्यक्ति वस्तुओं या क्रियाओं का चयन (selection) करके उसे पसंद-नापसंद विमा (liking–disliking dimension) में कोटिबद्ध (ranking) करता है। फलतः उसे कोई एक वस्तु या क्रिया अन्य वस्तु या क्रिया से अधिक पसंद या कम पसंद होती है। रिली (Reilly, 1990) के अनुसार अभिरुचि बालकों में एक प्रेरणात्मक बल (motivational force) के रूप में कार्य करता है जिसके परिणामस्वरूप वह किसी वस्तु को अन्य वस्तुओं से अलग कर उसपर विशेष ध्यान देता है। अतः, अभिरुचि का संबंध ध्यान (attention) से सीधा है।

अभिरुचि के प्रकार (Types of Interest)

मनोवैज्ञानिकों ने अभिरुचि के कई प्रकार बताए हैं। इनमें सुपर एवं क्राइट्स (Super & Crites, 1962) द्वारा अभिरुचि का किया गया वर्गीकरण (classification) सबसे अधिक लोकप्रिय है। उन्होंने अभिरुचि के अग्रांकित तीन प्रकार बताए हैं—

---

1. "An interest is a perference for one activity over other."—Sax: *Principles of Educational Movement and Evaluation*, 1974, p. 397

Scanned by CamScanner

(1) **व्यक्त अभिरुचि** (Expressed interest)—व्यक्त अभिरुचि वैसी अभिरुचि को कहा जाता है जिसमें किसी एक क्रिया (activity) की तुलना में व्यक्ति किसी दूसरी क्रिया को अधिक पसंद करने की स्पष्ट अभिव्यक्ति करता है। जैसे, शिक्षक द्वारा पूछने पर छात्र यदि स्पष्ट रूप से यह कहता है कि उसे संस्कृत एवं हिन्दी अन्य विषयों की तुलना में अधिक रुचिकर लगता है, तो यह **व्यक्त अभिरुचि** (expressed interest) का उदाहरण होगा।

(2) **प्रकट अभिरुचि** (Manifest interest)—प्रकट अभिरुचि से तात्पर्य वैसी अभिरुचि से होता है जिसकी अभिव्यक्ति व्यक्ति द्वारा स्वतः अपनी इच्छा से कोई काम करने से होती है। जैसे यदि कोई छात्र अकसर खाली समय में शतरंज खेलता पाया जाता है, तो ऐसा कहा जाता है कि शतरंज में उसकी अभिरुचि है और यह अभिरुचि प्रकट अभिरुचि का उदाहरण होगा।

(3) **आविष्कारिकात्मक अभिरुचि** (Inventoried interest)—आविष्कारिकात्मक अभिरुचि वैसी अभिरुचि को कहा जाता है जिसका ज्ञान मानक अभिरुचि आविष्कारिका (Standard interest inventory) का क्रियान्वयन (administer) करने के बाद पता चलता है। ऐसी मानक अभिरुचि आविष्कारिका (standard interest inventory) द्वारा कई तरह के अभिरुचि का मापन होता है। आविष्कारिका पर आए प्राप्तांक (score) के आधार पर यह पता चलता है कि अमुक छात्र की अभिरुचि क्या है।

इन तीन प्रमुख अभिरुचियों के अलावा कुछ शिक्षकों (teachers), शिक्षाशास्त्रियों (educators) एवं शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने अभिरुचि के और प्रकार का वर्णन किया है और वह है—**परीक्षित अरुचि** (tested interest)। परीक्षित अभिरुचि से तात्पर्य वैसी अभिरुचि से होता है जिसकी झलक व्यक्ति की उपलब्धियों (achievements) से होती है। यदि किसी छात्र का अंक-पत्र (marks-sheet) देखने से यह पता चलता है कि गणित में उसका अंक (marks) अन्य विषयों की तुलना में काफी अधिक है, तो ऐसी उम्मीद लगाई जाती है कि छात्र की अभिरुचि गणित में अन्य विषयों की तुलना में अधिक है। परंतु, सुपर (Super, 1949) ने परीक्षित अभिरुचि की वैधता (validity) को चुनौती दी है और कहा है कि इस तरह की अभिरुचि का आधार भ्रामक है और उसके आधार पर व्यक्ति की अभिरुचि के बारे में एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचना संभव नहीं है। जैसे, उक्त उदाहरण में गणित में उच्च अंक का कारण आसान प्रश्न या गणित के विषय में विशेष कोचिंग किया जाना हो सकता है। अतः, गणित में उच्च अंक के आधार पर यह अनुमान लगा लेना कि छात्र की गणित में अधिक अभिरुचि है, उचित नहीं होगा।

इस तरह, हम देखते हैं कि अभिरुचि के कई प्रकार हैं। इन प्रकारों में आविष्कारिकात्मक अभिरुचि का अध्ययन शिक्षाशास्त्रियों द्वारा विशेषकर मानक अभिरुचि आविष्कारिका (standard interest inventory) के माध्यम से अधिक किया गया है।

Scanned by CamScanner

अभिरुचि का मापन
(Measurement of Interest)

बालकों की अभिरुचि को मापने के दो तरीके (methods) अधिक लोकप्रिय हैं जो निम्नांकित हैं—

(अ) शिक्षक-निर्मित प्रविधियाँ (Teacher-made techniques) तथा

(ब) मानक अभिरुचि आविष्कारिका (Standard interest inventories)।

इन दोनों का वर्णन इस प्रकार है—

(अ) शिक्षक-निर्मित प्रविधियाँ (Teacher-made techniques)—छात्रों की अभिरुचियों को मापने की कुछ ऐसी प्रविधियाँ (techniques) हैं जिन्हें शिक्षकों द्वारा विशेष उद्देश्य से बनाया जाता

Scanned by CamScanner

है। अकसर वे इसका प्रयोग किसी शैक्षिक कार्यक्रम (educational programmes) के मूल्यांकन (evaluation) के लिए करते हैं। ऐसी प्रमुख प्रविधियाँ अग्रांकित हैं—

(1) चिह्नांकन सूची (Check lists)—छात्रों की अभिरुचि मापने की यह एक सरलतम प्रविधि है। चिह्नांकन सूची में शिक्षक विभिन्न शैक्षिक क्रियाओं (educational activities) की एक सूची तैयार करते हैं और छात्रों को उस सूची को इस निवेदन के साथ दे दिया जाता है कि जिन शैक्षिक क्रियाओं में उनकी अभिरुचि हो उनमें सही का चिह्न (✓) लगा दें। इससे शिक्षकों को छात्रों की सभी प्रमुख अभिरुचियों का कम समय में ही अच्छा ज्ञान हो जाता है।

(2) श्रेणीकरण (Rankings)—इस प्रविधि में शिक्षक विभिन्न तरह की शैक्षिक क्रियाओं की एक सूची तैयार करते हैं जो छात्रों को इस निवेदन के साथ दिया जाता है कि वे इन क्रियाओं को अपनी अभिरुचि के क्रम (order) में श्रेणीकरण कर दें। 1 की कोटि (rank) उस क्रिया को दें जिनमें उनकी अभिरुचि सबसे अधिक है, उससे कम पसंद या अभिरुचिवाली क्रिया को 2 की कोटि दें और इसी तरह सबसे अन्तिम कोटि (last rank) उसे दें जिनमें उनकी अभिरुचि सबसे कम हो। इस तरह श्रेणीकरण कर देने से किसी छात्रविशेष की अभिरुचि का तो पता चलता ही है, साथ-ही-साथ जब प्रत्येक क्रिया को प्रत्येक छात्र द्वारा दी गई कोटि को एक औसत कोटि (average rank) ज्ञात कर ली जाती है, तो इससे पूरी कक्षा के अधिमान (class preferences) का भी आसानी से मूल्यांकन हो जाता है।

(3) रेटिंग मापनी (Rating scales)—इस मापनी में प्रत्येक क्रिया (activity) पर छात्र अपनी पसंदगी एवं नापसंदगी की मात्रा (degree) को दी गई मापनी (scale) के बिन्दुओं (points) में से किसी एक पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करके करते हैं। जैसे, छात्र को निम्नांकित क्रियाओं पर अपनी प्रतिक्रिया दिए गए पाँच बिन्दुओं में किसी एक बिन्दु पर व्यक्त करके करने के लिए कहा जा सकता है—

(i)	संगीत सुनना	अत्यधिक पसंद	पसंद	तटस्थ	नापसंद	अत्यधिक नापसंद
(ii)	उपन्यास पढ़ना	अत्यधिक पसंद	पसंद	तटस्थ	नापसंद	अत्यधिक नापसंद
(iii)	कक्षा में साथियों को चिढ़ाना	अत्यधिक पसंद	पसंद	तटस्थ	नांपसंद	अत्यधिक नापसंद

दिए गए उत्तरों का विश्लेषण करके छात्रों की पसंदगी (likings) तथा नापसंदगी (dislikings) का पता किया जाता है। सामान्यतः, विश्लेषण करने के लिए अत्यधिक पसंद, पसंद, तटस्थ, नापसंद तथा अत्यधिक नापसंद के लिए क्रमशः 5, 4, 3, 2 एवं 1 का अंक दिया जाता है।

(4) स्वतंत्र अनुक्रिया प्रविधि (Free response technique)—जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, इस तरह की प्रविधि में शिक्षक छात्रों से कुछ ऐसे प्रश्न करते हैं जो उनकी आदत, शौक (hobby) या उन क्रियाओं से संबंधित होते हैं जिनमें उनकी अभिरुचि अधिक होती है। यहाँ छात्र उन प्रश्नों की अभिव्यक्ति करने में अपने इच्छानुसार शब्दों का प्रयोग करते हैं। बाद में उसका विश्लेषण करके शिक्षक छात्रों की अभिरुचि के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं।

Scanned by CamScanner

(ब) मानक अभिरुचि आविष्कारिका (Standard interest inventory)—अभिरुचि मापने के लिए विशेषज्ञों (experts) द्वारा करीब-करीब 62 मानक अभिरुचि आविष्कारिका उपलब्ध कराए गए हैं जैसा कि एरोन्सन (Aronson, 1990) ने इस क्षेत्र की प्रमुख आविष्कारिकाओं की समीक्षा (review) करने के बाद बताया है। परन्तु, इनमें शिक्षा के दृष्टिकोण से निम्नांकित तीन मानक अभिरुचि आविष्कारिकाओं (Standard Interest Inventories) को अधिक महत्त्वपूर्ण बताया गया है—

(1) स्ट्राँग अभिरुचि आविष्कारिका (Strong Interest Inventory or SII)—इस आविष्कारिका का निर्माण ई० के० स्ट्राँग (E K Strong, 1927) द्वारा किया गया। इस आविष्कारिका के दो फार्म (forms) हैं—एक फार्म का प्रयोग पुरुषों की अभिरुचि मापने में किया जाता है और दूसरे फार्म का प्रयोग महिलाओं की अभिरुचि मापने में किया जाता है। दोनों फार्म द्वारा उच्च विद्यालय, कॉलेज के छात्रों एवं वयस्कों की अभिरुचि का मापन होता है। प्रत्येक फार्म में 400–400 एकांश हैं जिनके द्वारा व्यक्तियों की अभिरुचि मूलतः विभिन्न स्कूल के विषयों (school subjects), पेशा (occupation), विभिन्न तरह के मनोविनोद (amusements) आदि के प्रति मापी जाती है। SII में व्यक्तियों की अभिरुचि को मानक प्राप्तांक (standard score) यानी T प्राप्तांक (T score) के रूप में व्यक्त किया जाता है। कैम्पबेल (Campbell, 1971) के अनुसार यदि किसी छात्र या व्यक्ति का T प्राप्तांक 57 या 58 से अधिक आता है, तो यह समझा जाता है कि उस व्यक्ति या छात्र की अभिरुचि उस विषय या क्षेत्र में (जिसमें T प्राप्तांक 57 या 58 आया है) एक सामान्य व्यक्ति की अभिरुचि से श्रेष्ठ (superior) है। SBIV के पुरुष फार्म का दो बार संशोधन (revision) हो चुका है—एक बार 1938 में और दूसरी बार 1966 में। उसी तरह इसके महिला फार्म के दो बार संशोधन हो चुके हैं—एक बार 1946 में और दूसरी बार 1969 में। 1974 में कैम्पबेल (Campbell) ने SBIV का संशोधित प्रारूप प्रस्तुत किया जिसे स्ट्राँग-कैम्पबेल अभिरुचि आविष्कारिका (Strong-Campbell Interest Inventory or SCII) कहा गया तथा इसमें 325 एकांश (items) थे जिसके द्वारा पेशा (occupations), स्कूल विषय (school subjects), क्रियाएँ (activities), मनोविनोद (amusements), व्यक्तियों के प्रकार (types of people), दो क्रियाओं के बीच अधिमान (preference between two activities) तथा आपकी विशेषताएँ (your characteristics) आदि के प्रति अभिरुचि का मापन होता है।

(2) कुडर परीक्षण (Kuder Tests)—इस परीक्षण का निर्माण जी० एफ० कुडर (G F Kuder) द्वारा 1954 तथा उसके बाद के भिन्न-भिन्न सालों में किया गया है। सच्चाई यह है कि इन भिन्न-भिन्न सालों में कुडर (Kuder) ने अभिरुचि मापने के लिए कुल 4 परीक्षणों का निर्माण किया है—कुडर व्यक्तिगत अधिमान रिकार्ड (Kuder Personal Preference Record), कुडर वोकेशनल इंटरेस्ट सर्वे, फार्म B तथा फार्म C (Kuder Vocational Interest Survey, Form B and Form C), औकुपेशनल इंटरेस्ट सर्वे, फार्म डी एवं फार्म डीडी (Occupational Interest Survey, Form D and Form DD) तथा जेनरल इंटरेस्ट सर्वे (General Interest Survey)। जेनरल इंटरेस्ट सर्वे द्वारा 7वीं कक्षा से कॉलेज के छात्रों तक की विभिन्न क्रियाओं में छात्रों की सामान्य अभिरुचि का मापन होता है। कुडर वोकेशनल इंटरेस्ट सर्वे द्वारा 10 विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्तियों की अभिरुचि का मापन होता है—यांत्रिक (mechanical), वैज्ञानिक (scientific), लिपिक (clerical), सामाजिक सेवा (social service), संगीत (musical), साहित्यिक (literary), कलात्मक (artistic), परिकल्पनात्मक (computational), बाहर (outdoors) तथा प्रत्ययकारी (persuasive)। औकुपेशनल इंटरेस्ट सर्वे, फार्म डी द्वारा 52 विभिन्न पेशाओं में व्यक्तियों की अभिरुचि मापी

Scanned by CamScanner

जाती है तथा फार्म डीडी द्वारा महिलाओं के लिए 57 विभिन्न पेशाओं में तथा पुरुषों के लिए 79 विभिन्न पेशाओं में अभिरुचि मापी जाती है। जेनरल इंटरेस्ट सर्वे को छोड़कर बाकी अन्य पाँचों इंटरेस्ट इन्वेण्ट्री का प्रयोग 9वीं कक्षा से लेकर कॉलेज के छात्रों की अभिरुचि को मापने में आसानी से किया जाता है।

(3) माइनेसोटा वोकेशनल इण्टरेस्ट इन्वेण्ट्री (Minnesota Vocational Interest Inventory or MVII)—इस परीक्षण का निर्माण 1965 में किया गया था तथा इसके द्वारा 21 पेशाओं (occupations) में वैसे व्यक्तियों की अभिरुचि की माप की जाती है जिनमें कालेज की शिक्षा ठीक से नहीं हो पाई और जिनमें अर्द्ध-कौशल कार्य (semi-skilled work) के प्रति उन्मुखता अधिक होती है। इसमें कुल 158 एकांश हैं और प्रत्येक एकांश में तीन-तीन विकल्प (choices) रहते हैं जिनमें व्यक्ति या छात्र को एक, जिसे वह सबसे अधिक पसंद करता है तथा एक, जिसे वह सबसे कम पसंद करता है, का चयन करता पड़ता है। इन 21 पेशाओं के अलावा MVII में अलग से 9 क्षेत्र मापनी (area scales) होती हैं जिनके आधार पर छात्रों की अभिरुचि के सामान्य क्षेत्र (general areas) का पता चलता है।

(4) जैक्सन वोकेशनल इंटरेस्ट (Jackson Vocational Interest Survay or JVIS)—इसमें 289 कथन हैं जो मूलतः कार्य संबंधित क्रियाओं (Job-related activities) को मापते हैं। प्रत्येक कथन में दो समान लोकप्रिय अभिरुचि (equally popular interest) का जोड़ा होता है जिसमें से किसी एक को चुनकर व्यक्ति अपनी अभिरुचि की अभिव्यक्ति करता है। इस परीक्षण का उपयोग कॉलेज एवं स्कूल के छात्रों को परामर्श देने एवं जीवनवृत्त शिक्षा (career education) में निर्देशन देने में काफी होता है।

इस तरह, हम देखते हैं कि छात्रों की अभिरुचि को मापने के लिए शिक्षक-निर्मित प्रविधियाँ तथा मानक अभिरुचि आविष्कारिका (Standard interest inventory) दोनों ही उपलब्ध हैं। इनमें सुविधानुसार किसी के भी सहारे छात्रों की अभिरुचि का मापन किया जा सकता है।

Scanned by CamScanner

अभिवृत्ति—अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Attitude—Meaning and Definitions)

विभिन्न विद्वानों द्वारा अभिवृत्ति को निम्न प्रकार परिभाषित किया गया है—

1. **ट्रेवर्स**—"व्यवहार को कोई एक दिशा प्रदान करने वाली प्रतिक्रिया के लिए आवश्यक, तत्परता का नाम अभिवृत्ति है।"

   (An attitude is a readiness to respond in such a way that behaviour is given a certain direction. —1973, p. 337).
2. **मकेशी एवं डोयल**—"अभिवृत्ति को हम किसी एक वस्तु से जुड़े हुए प्रत्ययों, विश्वासों, आदतों और अभिप्रेरणाओं के संगठन के रूप में परिभाषित कर सकते हैं।"

   (We define an attitude as an organisation of concepts, beliefs, habits and motives associated with a particular object.—1966, p. 560)
3. **सोरेन्सन**—"अभिवृत्ति किसी वस्तु के प्रति एक विशिष्ट भावना है इसलिए इसमें उस वस्तु (चाहे वह व्यक्ति, विचार या पदार्थ कुछ भी हो) से जुड़ी हुई परिस्थितियों में एक निश्चित प्रकार के व्यवहार करने की प्रवृत्ति निहित होती है। यह आंशिक रूप में तार्किक और आंशिक संवेगात्मक होती है तथा किसी भी व्यक्ति में जन्मजात न होकर उपार्जित होती है।

   (An attitude is a particular feeling about something. It therefore involves a tendency to behave in a certain way in situations which involve that something, whether person, idea or object. It is partially rational and partially emotional and is acquired, not inherent, in an individual.— 1977, p. 349).
4. **व्हिटेकर**—"अभिवृत्ति (शरीर अथवा मस्तिष्क की) पूर्व नियोजन अथवा तत्परता की वह अवस्था है जो सार्थक उद्दीपकों के प्रति पूर्व निश्चित तरीके से प्रतिक्रिया करने में सहायक होती है।"

   (An attitude is a predisposition or readiness to respond in a predetermined manner to relevant stimuli.— 1970, p. 591).

अभिवृत्ति, पहली परिभाषा के अनुसार व्यवहार को एक निश्चित दिशा प्रदान करने के लिए उत्तरदायी है। अगर किसी की किसी वस्तु के प्रति सकारात्मक (Positive) अभिवृत्ति है तो वह उस वस्तु के प्रति आकर्षित होगा, उसे पाने के लिए प्रयत्न करेगा और अगर नकारात्मक (Negative) अभिवृत्ति हुई तो वह उससे दूर भागेगा और यहाँ तक कि वह उसके नाम से ही चिढ़ने या उत्तेजित होने लगेगा। उदाहरण के लिए जिस व्यक्ति की जनतन्त्र के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है वह जनतन्त्रात्मक परम्पराओं और संस्थाओं के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण रखेगा और तानाशाही प्रक्रियाओं के प्रति प्रतिकूल रवैया अपनायेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि अभिवृत्तियों के द्वारा व्यवहार को एक निश्चित मोड़ दिया जाता है।

दूसरी परिभाषा में वस्तु के प्रति बनी हुई समस्त धारणाओं, विश्वासों, आदर्शों और अभिप्रेरणाओं की अभिवृत्ति के साथ जोड़ने का प्रयत्न किया गया है। ये एक प्रकार से अभिवृत्ति के विभिन्न अवयवों का निर्माण करते हैं। अभिवृत्ति के मुख्य रूप से तीन अवयव, विचारात्मक (Cognitive), क्रियात्मक (Conative or Action) और प्रभावात्मक (Affective) होते हैं। धारणाओं, प्रत्ययों और विश्वासों का सम्बन्ध विचारात्मक अवयव से, आदतों का क्रियात्मक और अभिप्रेरणाओं का प्रभावात्मक अवयवों से सीधा सम्बन्ध होता है। इस रूप में व्यक्ति जो भी किसी वस्तु के बारे में सोचता है, अनुभव करता है और अपनी जिस रूप में प्रतिक्रिया व्यक्त करता है, यह सब उसकी उस वस्तु के प्रति अभिवृत्ति को ही व्यक्त करता है। उदाहरण के लिए व्यक्ति की किसी राजनैतिक दल के प्रति अभिवृत्ति को ही लीजिये। उसका अनुकूल एवं प्रतिकूल कोई भी स्वरूप उस दल के प्रति बनाई गई धारणाओं, विश्वासों और भावनाओं का ही परिणाम

Scanned by CamScanner

है जो उसके विभिन्न क्रिया-कलापों द्वारा प्रकाश में आ सकता है। गर्मागर्म बहस चाहे साथियों से हो या अजनबियों से, उसकी अभिवृत्ति को सामने ला सकती है। चुनाव के समय उसका मुख्य आचरण एवं व्यवहार भी प्रत्यक्ष रूप में उसकी अभिवृत्ति को प्रकाशित कर देगा।

तीसरी परिभाषा बतलाती है कि कोई व्यक्ति किसी अभिवृत्ति के प्रभाव में आकर एक निश्चित प्रकार का व्यवहार क्यों करता है। अभिवृत्तियों के द्वारा किसी वस्तु या विचार के प्रति एक विशेष प्रकार की रुचि-अरुचि, पसंद-नापसंद पनप जाती है जिसकी बुनियाद कुछ हद तक तार्किक हो सकती है, परन्तु संवेगात्मक कारण अवश्य ही उससे जुड़े रहते हैं। व्यक्ति में ये बातें जन्मजात नहीं होतीं, अनुभव के द्वारा वातावरण ही इन्हें सिखाता है। उदाहरण के लिए किसी धर्म के प्रति विकसित अभिवृत्ति को ही लीजिए। कौन सीख कर आया था कि अपना धर्म औरों से अच्छा है, दूसरे धर्म घटिया हैं। यह सब यहाँ वातावरण ने सिखाया है। अपने को सही रास्ते पर सिद्ध करने के लिए कितने ही ठोस तर्क क्यों न दिये जाएँ संवेगों से हम कितने प्रभावित हैं इसे कौन झुठला सकता है।

अंतिम परिभाषा अभिवृत्ति को ऐसी प्रवृत्ति या मानसिक या शारीरिक अवस्था मानती है जो व्यक्ति को किसी एक परिस्थिति में एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करने को प्रेरित करती है। व्यक्ति की किसी विशेष उद्दीपक के प्रति किस प्रकार की प्रक्रिया होगी, यह उसके प्रति बनी अभिवृत्ति पर निर्भर करेगा। उदाहरण के लिये कांग्रेस पार्टी से संबंधित सभी उद्दीपकों के प्रति किसी व्यक्ति की एक निश्चित रूप की प्रतिक्रियाएं होंगी अगर उस पार्टी के प्रति उसमें कोई अभिवृत्ति अनुकूल या प्रतिकूल पनप गई है।

इस प्रकार अभिवृत्तियाँ बहुत कुछ सीमा तक किए जाने वाले व्यवहार के लिए उत्तरदायी ठहराई जा सकती हैं, परन्तु इससे यह नहीं समझा जाना चाहिए कि व्यक्ति का व्यवहार सम्पूर्ण रूप में उसकी अभिवृत्तियों पर ही निर्भर करता है। व्यक्ति का व्यवहार हर एक स्थिति में उसके व्यक्तित्व की अपनी विशेषताओं और स्थिति जिससे वह व्यवहार कर रहा होता है, दोनों का ही संयुक्त परिणाम होता है। इसलिए ऐसा होना असंगत नहीं कि व्यक्ति चाहे कितनी ही गहन अभिवृत्ति किसी विचार के प्रति रखे, परन्तु परिस्थितिवश वह बिल्कुल विपरीत व्यवहार कर सकता है। ऐसी दशा में अभिवृत्तियों के आधार पर व्यवहार की भविष्यवाणी तो नहीं की जा सकती, हाँ थोड़ी-बहुत अटकलें अवश्य लगाई जा सकती हैं कि प्रतिकूल या अनुकूल अभिवृत्ति के कारण अमुक व्यक्ति की किसी वस्तु या विचार के प्रति किस प्रकार की प्रतिक्रिया होगी।

परिणामस्वरूप अभिवृत्ति की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है कि *अभिवृत्ति व्यवहार को दिशा प्रदान करने वाली वह अर्जित प्रवृत्ति है जो व्यक्ति को किसी विशेष वस्तु या वस्तुओं के प्रति एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करने को तत्पर करती है बशर्ते कि वातावरणजन्य परिस्थितियों में कोई प्रतिकूल परिवर्तन न हो।*

अभिवृत्तियों की प्रकृति एवं विशेषताएँ (Nature and Characteristics of Attitudes)

अभिवृत्ति को व्यवहार से पूर्व की मनोदैहिक अवस्था या प्रवृत्ति के रूप में हमने समझा है। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या इस प्रकार की अन्य अवस्थाओं या प्रवृत्तियों जैसे—आदत, रुचियाँ, शीलगुण (Trait) और मूल अभिप्रेरकों को भी अभिवृत्तियों का नाम दिया जाना चाहिए? उत्तर स्पष्टतया नकारात्मक है। अभिवृत्ति इन सभी विशेषताओं से अलग प्रवृत्ति है। आगे दी गई विशेषताओं से इसकी प्रकृति को समझने में सहायता मिलेगी।

1. अभिवृत्तियों में व्यक्ति-वस्तु सम्बन्ध पाया जाता है (Attitudes have a subject–object relationship)—किसी भी विशेष वस्तु, व्यक्ति, समूह, संस्था, मूल्य अथवा मान्यता के प्रति बनी हुई अभिव्यक्ति इन सभी के प्रति व्यक्ति का कैसा सम्बन्ध है यह स्पष्ट करती है।

Scanned by CamScanner

2. अभिवृत्तियाँ अर्जित होती हैं (Attitudes are acquired or learned)—कोई भी अभिवृत्ति जन्मजात नहीं होती, वातावरण में उपलब्ध अनुभवों के द्वारा अर्जित की जाती है। इस आधार पर अभिवृत्तियों को मूल अभिप्रेरणाओं से अलग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए 'भूख' को ही लीजिये जो जन्मजात प्रवृत्ति है इसे सीखा नहीं जाता जबकि किसी विशेष प्रकार के भोजन के प्रति हमारा आकर्षण एक अर्जित प्रवृत्ति के नाते अभिवृत्ति का स्वरूप ले लेता है।

3. अभिवृत्तियाँ तत्परता की अपेक्षाकृत स्थायी अवस्थाएँ हैं (Attitudes are relatively enduring states of readiness)—किसी वस्तु या प्रक्रिया के प्रति व्यक्ति की स्वाभाविक तत्परता जिसे अभिवृत्ति के नाम से जाना जाता है, उसका स्वरूप बहुत कुछ स्थायी होता है। मूल अभिप्रेरणाओं के स्वरूप में इतना स्थायित्व नहीं होता। भूख और कामोत्तेजना (Sexual Tension) सम्बन्धी तत्परता आवश्यकता पूर्ति के बाद समाप्त हो जाती है जबकि पत्नी के प्रति आकर्षण में ढली अभिवृत्ति कामेच्छा की संतुष्टि के बाद भी बनी रहती है।

4. अभिवृत्तियों में अभिप्रेरणात्मक-प्रभावोत्पादक विशेषता पाई जाती है (Attitudes have motivational-affective characteristics)—अभिवृत्तियों के विकास में किसी अभिप्रेरणा का हाथ होता है जबकि आदत आदि अन्य प्रवृत्तियों में यह आवश्यक नहीं। उदाहरण के लिए सीधे हाथ से लिखने की आदत को ही लें तो इसे किसी अभिप्रेरणात्मक प्रभाव से जुड़ा हुआ नहीं माना जा सकता। दूसरी ओर अपने परिवार, राष्ट्र, धर्म और अन्य पवित्र एवं प्रतिष्ठित संस्थाओं के प्रति बनी हुई अभिवृत्तियों में कोई निश्चित प्रेरणात्मक प्रभाव पूरी तरह स्पष्ट हो सकता है।

5. सम्बन्धित उद्दीपनों के अनुरूप ही अभिवृत्तियों की संख्या असीमित होती है (Attitudes are as numerous and varied as the stimuli to which they refer)—अभिवृत्तियों का क्षेत्र एवं स्वरूप बहुत विस्तृत है। अभिवृत्तियाँ व्यक्ति को किसी विशिष्ट उद्दीपन (Stimulus) के प्रति विशेष प्रतिक्रिया व्यक्त करने को तत्पर करती हैं। जितने प्रकार के विभिन्न-विभिन्न उद्दीपन होंगे उतनी ही विभिन्न अभिवृत्तियाँ होंगी ताकि उपयुक्त प्रतिक्रियाएँ व्यक्त हो सकें। अभिवृत्तियों में परिस्थितिजन्य संशोधन या परिवर्तन भी होता है। इस कारण से भी इनके स्वरूप में बहुत कुछ लचीलापन है। इसलिए यह बात सही है कि अभिवृत्तियाँ उतनी ही असीमित हैं जितनी कि सम्बन्धित उद्दीपन और परिस्थितियाँ।

6. अभिवृत्तियों का प्रसार क्षेत्र पूर्णतः सकारात्मक से पूर्णतः नकारात्मक तक फैला होता है (Attitudes range from strongly positive to strongly negative)—अभिवृत्तियों में दिशा और परिमाण (Direction and Magnitude) दोनों ही पाये जाते हैं। जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु या विचार के प्रति आकर्षित होकर उसे पाना चाहता है तो उसकी अभिवृत्ति की दिशा सकारात्मक मानी जाती है और अगर वह उससे विकसित हो कर दूर भागना चाहे तो अभिवृत्ति की दिशा नकारात्मक कहलाती है। दिशा के साथ-साथ अभिवृत्ति में भावनाओं की तीव्रता भी जुड़ी रहती है जिससे यह बोध होता है कि प्रवृत्ति कितनी अधिक मात्रा में सकारात्मक है या नकारात्मक।

Scanned by CamScanner

अभिवृत्ति मापन
(Measurement of Attitudes)

अभिवृत्तियाँ निश्चित रूप से आंतरिक प्रवृत्तियाँ हैं। अगर हम इनका मापन करना चाहते हैं तो इन्हें बाहर प्रकाश में लाना होगा। बाह्य व्यवहार के द्वारा ही इन्हें जाना और समझा जा सकता है। ऐसा हम दो प्रकार से कर सकते हैं– (i) प्रत्यक्ष विधि द्वारा (ii) अप्रत्यक्ष द्वारा। आइये, इन विधियों को समझा जाये।

प्रत्यक्ष विधि (Direct Method)

इस विधि में जिस वस्तु या विषय के बारे में व्यक्ति की अभिवृत्ति का पता लगाना हो, उसके बारे में उसकी राय या विचार मालूम किये जाते हैं तथा उनके आधार पर उसकी अभिवृत्ति का मापन किया जाता है। इस कार्य के लिए निम्न प्रकार आगे बढ़ा जा सकता है–

(i) व्यक्ति से प्रत्यक्ष रूप में यह मालूम करना कि वह विषय या वस्तु के बारे में कैसी भावना रखता है? (प्रश्नावली और साक्षात्कार विधियाँ इसके अन्तर्गत आ सकती हैं)।

(ii) दिये हुए कथनों में से जिन कथनों के साथ उनकी राय मिलती है, उन पर निशान अंकित करना। (चैकिंग लिस्ट आदि)

(iii) किसी एक विषय पर दिये हुए क्रमबद्ध कथनों के बारे में बताना कि वह कितनी सीमा तक कथन के पक्ष में है या विपक्ष में (अभिवृत्ति मापनी)

तीसरे क्रम में वर्णित विधा (Devices) अभिवृत्ति मापनी (Attitude Scale) कहलाती है। अभिवृत्तियों के मापन में इनका सर्वाधिक प्रचलन है। मुख्य रूप से निम्न दो प्रकार की अभिवृत्ति मापनी अधिक काम में लाई जाती है।

थर्स्टन अभिवृत्ति मापनी (Thrustone's attitue scale)

इन्हें सम-दृष्टि अन्तर मापनी (Equal-appearing intervals scales) नाम भी दिया जाता है। ऐसी मापनी का निर्माण करने के लिए किसी वस्तु, व्यक्ति या प्रक्रिया के प्रति विचार व्यक्त करने वाले अनेक कथन एकत्रित किये जाते हैं। इन्हें कुछ निर्णायकों के द्वारा 11 श्रेणियों में, जो "बहुत अनुकूल" से लेकर "बहुत प्रतिकूल" तक फैली होती है, विभक्त कराया जाता है। वह कथन जिसे अधिकांश निर्णायक गण अनुपयुक्त समझते हैं, छोड़ दिया जाता है। शेष कथन मापनी का निर्माण करते हैं तथा विषय के बारे में निश्चित राय या मत का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनमें से प्रत्येक कथन को

Scanned by CamScanner

मापनी मूल्य (Scale Value) प्रदान किया जाता है जो निर्णायकों द्वारा ज्ञात मध्यांक मूल्य (Median Value) पर आधारित होता है। उदाहरण के लिए अगर आधे निर्णायकों ने किसी कथन को मध्यांक मूल्य के आधार पर मापनी में चौथा या उससे कम क्रम दिया है और आधों ने पाँच या उससे अधिक, तब यहाँ इस स्थिति में कथन का मापनी मूल्य 4.5 होगा। उदाहरण के लिए चर्च के प्रति अभिवृत्ति मापन हेतु थर्स्टन मापनी के कुछ कथन उनके मापनी मूल्यों सहित नीचे दिये जा रहे हैं–

कथन		मापनी मूल्य
मुझे विश्वास है कि आज चर्च अमेरिका की सबसे महान् संस्था है।	.....	0.2
मुझे विश्वास है कि जीवन को सबसे अच्छी तरह जीने के लिए चर्च की सदस्यता आवश्यक है।	.....	1.5
मैं धर्म में विश्वास करता हूँ, परन्तु मैं चर्च कभी ही जाता हूँ।	.....	5.4
मैं सोचता हूँ कि चर्च समाज का खून चूसने वाली जोंक है।	.....	1.0

मापनी द्वारा अभिवृत्ति मापन करने के लिए व्यक्तियों से कहा जाता है कि जिन कथनों से वे सहमत हैं उनके आगे ✓ का निशान अंकित कर दें। अंकित निशानों के आगे दिये हुए मापनी मूल्यों का योग करके जितने कथनों को अंकित किया है उनको भाग देकर व्यक्ति का मापनी क्रम (Scale position) ज्ञात कर लिया जाता है और इस आधार पर उसकी अभिवृत्ति का अनुमान लगा लिया जाता है।

लिकर्ट अभिवृत्ति मापनी (Likert attitude scale)

यह मापनी थर्स्टर्न मापनी से अधिक लोकप्रिय है। इसमें उससे अधिक कथन प्रयुक्त होते हैं और निर्णायकों द्वारा कथनों को मापनी मूल्य देने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती। इसके निर्माण के लिए किसी वस्तु, व्यक्ति या प्रक्रिया के प्रति विचार प्रकट करने वाले बहुत सारे ऐसे कथन या पद एकत्रित कर लिए जाते हैं जो स्पष्टतया अनुकूल या प्रतिकूल अभिवृत्ति को प्रकाश में लाते हों। इन कथनों या पदों का पद विश्लेषण (Item-analysis) कर यह देखा जाता है कि कौन-सा पद या कथन वस्तु या प्रक्रिया के बारे में अभिवृत्ति की जांच करता है, कौन सा नहीं। अनुपयुक्त कथनों को छोड़ दिया जाता है। शेष कथन मापनी का निर्माण करते है। मापनी द्वारा किसी भी व्यक्ति की अभिवृत्ति मापने के लिए उससे यह पूछा जाता है कि वह दिये हुए कथन से किस सीमा तक सहमत या असहमत है। बहुधा इसके लिए 5 विकल्प दिये जाते हैं। उदाहरण के लिए अन्तर्राष्ट्रीयता के प्रति अभिवृत्ति मापने के लिए प्रयुक्त निम्न कथनों पर दृष्टि डालिये–

निर्देश – नीचे दिये हुए कथनों के पहले लिखे हुए अक्षरों पर गोल घेरा बनाइये। इनमें से A का अर्थ है "सहमति", SA का अर्थ है "पूर्ण सहमति", D का "असहमति", SD का "पूर्ण असहमति" और ? का अर्थ है "अनिश्चित"।

SA, A. ? D, SD चाहे हमारा देश सही हो या गलत, हमें इसके लिए लड़ने को तैयार रहना चाहिए।

SA, A. ? D, SD किसी भी परिस्थिति में हमारे देश को अब कभी भी युद्ध नहीं छेड़ना चाहिए।

कथनों या पदों को अंक प्रदान करने के लिए अनुकूल कथनों में पूर्ण सहमति वाले उत्तर को 5 अंक, सहमति वाले को 4, अनिश्चित को 3, असहमति को 2 तथा पूर्ण असहमति को 1 अंक प्रदान किया जा सकता है। इस प्रकार एक व्यक्ति द्वारा प्राप्त किये गए विभिन्न कथनों के फलांकों (Scores) को जोड़कर उनके सम्पूर्णांक (Total score) ज्ञात कर लिए जाते हैं तथा फिर इस आधार पर उसकी अभिवृत्ति का अनुमान लगा लिया जाता है।

Scanned by CamScanner

अप्रत्यक्ष विधियाँ (Indirect Measures of Attitudes)

अभिवृत्ति मापन के लिए जिस प्रत्यक्ष विधि की पहले के पृष्ठों में चर्चा की गई है वह कई दृष्टियों से दोषयुक्त है। इसमें व्यक्ति अपनी सही अभिवृत्ति को छुपा सकता है। यह भी हो सकता है कि उसे यह नहीं पता हो कि उस वस्तु या प्रक्रिया के बारे में वह कैसी भावना रखता है या वह इस अनुभूति को विचारों में व्यक्त कर सकने में असमर्थता अनुभव करता हो अथवा अव्यक्त, अमूर्त के बारे में उसे अपनी अभिवृत्ति स्पष्ट न हो। बाह्य व्यवहार (Overt behaviour) भी अभिवृत्ति को ठीक प्रकार से प्रकाश में नहीं ला सकता। जब राजनीतिज्ञ किसी बच्चे का चुम्बन लेते हैं तो उसका यह निश्चित अर्थ नहीं कि वे बच्चों के प्रति अवश्य ही स्नेहात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

इन दोषों से छुटकारा पाने के लिए अभिवृत्ति मापन के लिए अप्रत्यक्ष विधियों का सहारा लिया जाता है। इन विधियों में व्यक्तियों को यह मालूम कराये बिना कि उसे जो करने को कहा जा रहा है उसका क्या प्रयोजन है अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने को प्रेरित किया जाता है। प्रक्षेपण तकनीक (Projective Techniques) जिनका प्रयोग व्यक्तित्व मापन में काफी किया जाता है, इसका अच्छा उदाहरण है। इनकी विस्तृत चर्चा आगे 'व्यक्तित्व' सम्बन्धी अध्याय में की जायेगी। इस तकनीक का सार यह है कि व्यक्ति के सामने कुछ ऐसी सामग्री या परिस्थितियां रखी जाती हैं कि वह उनकी प्रतिक्रिया व्यक्त करने में अपने आन्तरिक व्यवहार को सामने ले आये। इन प्रतिक्रियाओं के बुद्धिमत्तापूर्ण मूल्यांकन द्वारा व्यक्ति की किसी वस्तु या प्रक्रिया के बारे में विकसित अभिवृत्ति का अनुमान लगाया जा सकता है।

प्रश्न उठता है कि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों विधियों में से किसे अभिवृत्ति मापन में उपयोग में लाया जाये। कमियां होने पर भी दोनों ही अपने-अपने स्थान पर श्रेष्ठ हैं। मेरे विचार में उपयुक्त बात तभी बनेगी जब दोनों के समन्वित परिणामों को मापन का आधार बनाया जाये। उसी अवस्था में अभिवृत्ति के दोनों पक्षों—आन्तरिक एवं बाह्य का मापन कर व्यक्ति की अभिवृत्ति के बारे में बहुत कुछ सही अनुमान लगाया जा सकेगा।

Scanned by CamScanner